NEXT IAS

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनाँक: 28-03-2026

विषय सूची

विश्व बौद्ध शांति सम्मेलन 2026

फ़ारसी किस प्रकार अपने युग की 'अंग्रेज़ी' के रूप में प्रतिष्ठित हुई

वैश्विक स्तर पर विद्यालय से बाहर रहने वाली जनसंख्या बढ़कर 273 मिलियन तक पहुँची

सऊदी अरब का भूमि पुनर्स्थापन मॉडल

संक्षिप्त समाचार

भारत का लक्ष्य: 2035 तक 60% गैर-जीवाश्म ईंधन ऊर्जा स्रोत

यूथालिया जुबीनगार्गी

आंध्र प्रदेश में ऑलिव रिडले कछुओं का संरक्षण

खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स

तुंगुस्का वायु रक्षा मिसाइल प्रणाली

रेड-क्राउन्ड रूफ्ड टर्टल

विश्व बौद्ध शांति सम्मेलन 2026

संदर्भ

- हैदराबाद ने *विश्व बौद्ध शांति सम्मेलन 2026* का उद्घाटन आयोजित किया।

परिचय

- यह सम्मेलन *बुद्धवनम्* और *तेलंगाना पर्यटन विकास निगम* द्वारा, *वियतनाम बौद्ध संघ* के सहयोग से आयोजित किया गया है।
- इसमें 20 से अधिक देशों के मंत्री, भिक्षु, विद्वान और प्रतिनिधि एकत्रित होते हैं ताकि शांति, मेल-मिलाप एवं नैतिक नेतृत्व पर संवाद को आगे बढ़ाया जा सके।
- **उद्देश्य:** बुद्धवनम् को विश्व बौद्ध देशों के समक्ष *बौद्ध धरोहर थीम पार्क* के रूप में प्रस्तुत करना।उन्हें प्रोत्साहित करना कि वे बुद्धवनम् में अपने मठ और शैक्षणिक संस्थान स्थापित करें ताकि भारत से अधिकतम आगंतुक आकर्षित किए जा सकें।
  - यह एक व्यापक वैश्विक पहल का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य तेलंगाना को *बौद्ध धरोहर कूटनीति और शांति निर्माण* का केंद्र स्थापित करना है।

बुद्धवनम्

- यह तेलंगाना में स्थित है और भारत का प्रथम *बौद्ध धरोहर थीम पार्क* है।
- कृष्णा नदी के तट पर स्थित यह स्थल भगवान बुद्ध के जीवन और शिक्षाओं को कला, मूर्तियों, ध्यान स्थलों एवं विषयगत प्रदर्शनों के माध्यम से प्रस्तुत करता है।
- इसका विकास *तेलंगाना राज्य पर्यटन विकास निगम* द्वारा किया गया है।

बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म एक आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपरा है, जो *सिद्धार्थ गौतम* (बुद्ध) की शिक्षाओं पर आधारित है। वे लगभग 563 से 483 ईसा पूर्व के बीच नेपाल एवं भारत में रहे।
- इसका मूल उद्देश्य मानव दुःख, उसके कारणों और उससे मुक्ति के मार्ग को समझना है।
- बौद्ध धर्म *निर्वाण* की ओर मार्ग प्रदान करता है, जो दुःख और जन्म-मरण के चक्र (संसार) से मुक्ति है।

बुद्ध की मुख्य शिक्षाएँ

- **चार आर्य सत्य**
  - **दुःख:** जीवन दुःखमय या असंतोषजनक है।
  - **समुदय:** दुःख तृष्णा और आसक्ति (तन्हा) से उत्पन्न होता है।
  - **निरोध:** तृष्णा का त्याग कर दुःख का अंत संभव है।
  - **मार्ग:** दुःख निरोध का मार्ग *अष्टांगिक मार्ग* है।
- **आर्य अष्टांगिक मार्ग**
  - तीन श्रेणियों में विभाजित: प्रज्ञा, शील और समाधि।
- **अस्तित्व के तीन लक्षण**
  - **अनिच्चा (अनित्य):** सब कुछ परिवर्तनशील है।
  - **दुःख:** अस्तित्व असंतोष से भरा है।
  - **अनत्ता (अनात्म):** कोई स्थायी, अपरिवर्तनीय आत्मा नहीं है।

- **लक्ष्य: निर्वाण (निब्बान)**
  - दुःख और पुनर्जन्म से परे की अवस्था।
  - प्रज्ञा, नैतिक जीवन और मानसिक अनुशासन से प्राप्त।
  - निर्वाण परम मुक्ति और शांति है।

बौद्ध परिपथ

- 2016 में पर्यटन मंत्रालय ने *बौद्ध परिपथ* को देश का प्रथम अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन परिपथ घोषित किया। इसमें नेपाल और श्रीलंका के स्थलों के साथ भारत के स्थल भी शामिल हैं।
- इसका उद्देश्य पर्यटकों और तीर्थयात्रियों को बुद्ध की शिक्षाओं का प्रत्यक्ष अनुभव कराना और उनके पदचिह्नों का अनुसरण कराना है।
- **मुख्य स्थल:** बोधगया, वैशाली, राजगीर, कुशीनगर, सारनाथ, श्रावस्ती, कपिलवस्तु और लुंबिनी।
- **चार प्रमुख बौद्ध स्थल (चतुर्महास्थान):**
- **लुंबिनी (नेपाल):** बुद्ध का जन्मस्थान।
- **बोधगया (बिहार):** बोधि वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्ति।
- **सारनाथ (उत्तर प्रदेश):** प्रथम उपदेश (धम्मचक्र प्रवर्तन)।
- **कुशीनगर (उत्तर प्रदेश):** महापरिनिर्वाण (देहावसान)।

अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध महासंघ (IBC)

- इसकी स्थापना 2012 में *नई दिल्ली* में आयोजित *वैश्विक बौद्ध सम्मेलन* के बाद हुई।
- IBC विश्व का पहला संगठन है जो 39 देशों और 320 से अधिक सदस्य संस्थाओं के बौद्ध संगठनों, मठों एवं गृहस्थ संस्थाओं को एक साथ लाता है।
- **मिशन:** वैश्विक संवादों में बौद्ध मूल्यों को समाहित करना और सद्भाव को बढ़ावा देना।
- **मुख्यालय:** नई दिल्ली।
- **शासन संरचना:** इसमें मठवासी और गृहस्थ दोनों की भागीदारी है, जो बुद्ध *धम्म* के संरक्षण एवं प्रचार में सामूहिक उत्तरदायित्व को दर्शाती है।

स्रोत: TH

फ़ारसी किस प्रकार अपने युग की 'अंग्रेज़ी' के रूप में प्रतिष्ठित हुई

संदर्भ

- फ़ारसी ने सदियों तक भारत की भाषा और साहित्य को गहराई से प्रभावित किया है। इसने प्रशासन, कविता एवं हिंदी, उर्दू तथा क्षेत्रीय संस्कृतियों की शब्दावली को आकार दिया है और दैनिक बोलचाल में भी अपनी छाप छोड़ी है।

फ़ारसी भाषा की उत्पत्ति

- फ़ारसी भाषा की उत्पत्ति प्राचीन ईरान में हुई और यह लगभग 2,500 वर्षों के भाषाई विकास का परिणाम है।
- यह *इंडो-ईरानी* शाखा की भाषा है, जो *इंडो-यूरोपीय* भाषा परिवार का हिस्सा है।
- फ़ारसी प्राचीन फ़ारसी साम्राज्य की भाषा बनी और भारत की पूर्वी सीमा से लेकर रूस के उत्तर तक, फारस की खाड़ी के दक्षिणी तट से लेकर मिस्र एवं भूमध्यसागर तक व्यापक रूप से बोली जाती थी।
- समय के साथ पारसी भाषा अपने आधुनिक रूप में विकसित हुई और आज मुख्यतः ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, ताजिकिस्तान एवं उज़्बेकिस्तान के कुछ हिस्सों में बोली जाती है।

भारत में फ़ारसी भाषा

- **भारतीय भाषाओं पर प्रभाव:** हिंदी की दैनिक शब्दावली का एक बड़ा हिस्सा फ़ारसी से आया है। इसका प्रभाव उर्दू, मराठी, बंगाली और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं पर भी पड़ा।
- **फ़ारसी साहित्य का केंद्र भारत:** अकबर के समय से भारत फ़ारसी साहित्यिक गतिविधियों का वैश्विक केंद्र बना। 1700 तक भारत में ईरान से अधिक फ़ारसी जानने वाले लोग थे।
- **कूटनीति और शासन की भाषा:** फ़ारसी सदियों तक प्रशासन और कूटनीति की आधिकारिक भाषा रही।
- **संस्कृति का आदान-प्रदान:** गंगा के मैदान और दक्षिणी प्रायद्वीप लंबे समय से अंतर-क्षेत्रीय आदान-

प्रदान के केंद्र रहे हैं। 11वीं शताब्दी से फ़ारसी ग्रंथ और वक्ता पश्चिम, मध्य और दक्षिण एशिया में फैले।

भारत में फ़ारसी भाषा का विकास

- **राजवंशों का प्रभाव:** 11वीं शताब्दी के मध्य से ग़ज़नवी वंश ने लाहौर से पंजाब पर शासन किया और फ़ारसी संस्थाएँ व परंपराएँ लेकर आए।
  - **कवियों का आगमन:** ग़ज़नी के तुर्क जब भारत आए तो वे फ़ारसी कवियों को भी साथ लाए।
- **शासन की भाषा:** दिल्ली, कन्नौज, ग्वालियर, उज्जैन, बिहार और वाराणसी जैसे क्षेत्रों में मुस्लिम शासन स्थापित होने पर फ़ारसी शिक्षा का नया केंद्र उभरा।
  - 14वीं शताब्दी तक फ़ारसी दक्षिण एशिया में शासन की प्रमुख भाषा बन गई। दिल्ली सल्तनत और बाद में मुग़ल साम्राज्य में राजस्व और न्यायिक प्रशासन में इसका व्यापक प्रयोग हुआ।
- **प्रशासनिक शब्दावली:** प्रशासन से जुड़े कई शब्द फ़ारसी से आए: कागज़, रसीद, वकील, दीवानी, सलाहकार, चपरासी।
  - **प्रशासनिक इकाइयाँ:** शहर, तहसील, मोहल्ला, परगना, ज़िला।
  - **डाक संबंधी शब्द:** ख़त, लिफ़ाफ़ा, पता, ख़बर, अख़बार।
- **संगीत और खेलों की शब्दावली:** तबला, सितार, रुबाब, शहनाई, नगाड़ा, सरोद; शतरंज, ताश, पतंग, चौगान (पोलो), कुश्ती, पहलवानी।
- **स्थापत्य:** दीवार, हवेली, मकान, मंज़िल, बरामदा, बुर्ज, किला, महल।
- **धार्मिक विचारों में भी फ़ारसी शब्द आए:** सिख परंपरा में *हुक्म* (ईश्वर की कृपा), *लंगर* (सामूहिक भोजन), *खालसा* (प्रतिज्ञाबद्ध समुदाय)।
- **मुग़ल काल:** निर्णायक परिवर्तन 1582 में हुआ जब अकबर ने फ़ारसी को साम्राज्य की आधिकारिक भाषा बना दिया।
  - प्रशासन और शिक्षा दोनों में फ़ारसी का प्रभुत्व स्थापित हुआ। राज्य के अभिलेख, रिपोर्ट एवं इतिहास ग्रंथ सभी फ़ारसी में लिखे गए।
- **भौगोलिक विस्तार:** 18वीं शताब्दी में बिहार में हिंदू और मुस्लिम ज़मींदारों ने मदरसे स्थापित किए, जहाँ हिंदू विद्वान फ़ारसी पढ़ाते थे।
- **ईस्ट इंडिया कंपनी की आधिकारिक भाषा:** 1765 में शाह आलम द्वितीय ने बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी कंपनी को दी, इस शर्त पर कि फ़ारसी न्यायालय की भाषा बनी रहे।
  - कंपनी ने मौजूदा व्यवस्था को बनाए रखा और राजस्व, न्यायिक तथा पुलिस प्रशासन में फ़ारसी का प्रयोग जारी रखा।
  - ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने फ़ारसी में बड़े निवेश किए और 1832–37 के प्रशासनिक सुधारों तक यह कंपनी की आधिकारिक भाषा रही।
- **उर्दू द्वारा प्रतिस्थापन:** 1832–37 में कंपनी ने प्रशासन में फ़ारसी को उर्दू (और बाद में अन्य स्थानीय भाषाओं) से बदल दिया।
  - नागरिक और आपराधिक संहिताएँ अनुवादित की गईं; जिनमें अरबी-फ़ारसी शब्दावली का व्यापक प्रयोग बना रहा।
- नई साम्राज्यवादी और स्थानीय भाषाओं के उदय ने अंततः फ़ारसी की स्थिति को कमजोर कर दिया।

स्रोत: IE

वैश्विक स्तर पर विद्यालय से बाहर रहने वाली जनसंख्या बढ़कर 273 मिलियन तक पहुँची

संदर्भ

- यूनेस्को की नवीनतम रिपोर्ट *"2026 जीईएम रिपोर्ट — पहुँच और समानता: 2030 की ओर उलटी गिनती"* के अनुसार, वर्ष 2024 में विद्यालय से बाहर रहने वाली वैश्विक जनसंख्या 273 मिलियन तक पहुँच गई है।

रिपोर्ट की प्रमुख बातें

- **कम प्रतिधारण और पूर्णता:** रिपोर्ट में कहा गया है कि विश्व स्तर पर केवल दो-तिहाई छात्र ही माध्यमिक शिक्षा पूरी करते हैं।
- **शिक्षा से वंचित बच्चे:** प्रत्येक छह में से एक विद्यालय-आयु वर्ग का बच्चा शिक्षा से बाहर है, जो सार्वभौमिक शिक्षा प्राप्त करने में बड़ी चुनौती को दर्शाता है।
- **प्रवेश से सीख सुनिश्चित नहीं होती:** रिपोर्ट इस बात पर बल देती है कि विद्यालयों में नामांकन बढ़ने का अर्थ सार्थक सीखने के परिणाम नहीं है।
- **गुणवत्ता शिक्षा की बाधाएँ:** भीड़भाड़ वाले कक्ष, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी और अपर्याप्त शिक्षण सामग्री प्रमुख अवरोध हैं।
- **अपर्याप्त वित्तपोषण:** रिपोर्ट इंगित करती है कि अपर्याप्त और गलत लक्षित सार्वजनिक वित्तपोषण सार्वभौमिक शिक्षा प्राप्त करने में बड़ी बाधा है।

विद्यालय शिक्षा में सकारात्मक प्रवृत्तियाँ

- रिपोर्ट में उल्लेख है कि 2000 से कई देशों ने विद्यालय से बाहर रहने वाली जनसंख्या में उल्लेखनीय कमी की है।
- **मेडागास्कर और टोगो** ने बच्चों में विद्यालय से बाहर रहने की दर 80 प्रतिशत से अधिक घटाई है।
- **मोरक्को और वियतनाम** ने किशोरों में इसी तरह की प्रगति की है, जबकि **जॉर्जिया और तुर्किये** ने युवाओं में परिणाम सुधारे हैं।
- **कोट डी'आइवोर** ने सभी आयु वर्गों में विद्यालय से बाहर रहने की दर आधी कर दी है।

भारत में विद्यालय शिक्षा

- भारत विश्व की सबसे बड़ी विद्यालय प्रणाली संचालित करता है, जिसमें 24.69 करोड़ छात्र, 14.71 लाख विद्यालय और 1.01 करोड़ से अधिक शिक्षक शामिल हैं (UDISE+ 2024-25)।
- सकल नामांकन अनुपात (GER) के अनुसार:
  - प्रारंभिक स्तर (कक्षा III से V): 95.4
  - मध्य स्तर (कक्षा VI से VIII): 90.3
  - माध्यमिक स्तर (कक्षा IX से XII): 68.5

भारत में सरकारी पहल

- **समग्र शिक्षा अभियान (SSA):** पूर्व-प्राथमिक से कक्षा XII तक विद्यालय शिक्षा क्षेत्र की व्यापक योजना। इसमें पूर्ववर्ती योजनाएँ — सर्व शिक्षा अभियान, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान और शिक्षक शिक्षा — सम्मिलित हैं।
- **पीएम श्री विद्यालय:** 14,500 विद्यालयों का विकास आधुनिक अधोसंरचना और शिक्षण पद्धति के साथ आदर्श संस्थानों के रूप में।
- **मध्याह्न भोजन योजना:** सरकारी विद्यालयों में छात्रों को निःशुल्क भोजन उपलब्ध कराना ताकि उपस्थिति बढ़े, पोषण सुधरे और ड्रॉपआउट दर घटे।
- **शिक्षा का अधिकार (RTE) अधिनियम, 2009:** 6-14 आयु वर्ग के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की गारंटी।
- **माध्यमिक शिक्षा हेतु कन्या प्रोत्साहन योजना:** ग्रामीण क्षेत्रों की लड़कियों को शिक्षा जारी रखने हेतु वित्तीय प्रोत्साहन।
- **नई शिक्षा नीति 2020:**
  - प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) पर बल।
  - 5+3+3+4 विद्यालय संरचना का परिचय।
  - रटने के बजाय आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता और समस्या-समाधान पर ध्यान।

निष्कर्ष

- यूनेस्को के निष्कर्ष बताते हैं कि वैश्विक शिक्षा संकट केवल पहुँच तक सीमित नहीं है, बल्कि समानता और सीखने की गुणवत्ता से भी जुड़ा है।
- सतत विकास लक्ष्य 4 की 2030 की समयसीमा निकट है, इसलिए त्वरित और केंद्रित कार्रवाई की आवश्यकता है।

- यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक बच्चा न केवल विद्यालय जाए बल्कि प्रभावी ढंग से सीखे भी, *सर्वसमावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा* के दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए अनिवार्य है।

स्रोत: DTE

सऊदी अरब का भूमि पुनर्स्थापन मॉडल

संदर्भ

- संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए बनाए गए कन्वेंशन (UNCCD) ने रिपोर्ट किया है कि सऊदी अरब ने लगभग दस लाख हेक्टेयर क्षतिग्रस्त भूमि को पुनर्स्थापित किया है और इसे जल-संकटग्रस्त एवं मरुस्थलीय क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर भूमि पुनर्वास का एक मॉडल माना जा रहा है।

वैश्विक भूमि क्षरण की सीमा

- भूमि क्षरण का अर्थ है भूमि की उत्पादकता में गिरावट, जो मृदा अपरदन, लवणीयकरण, वनों की कटाई और अस्थिर भूमि उपयोग जैसी कारकों के कारण होती है।
- विश्व की लगभग 40% भूमि सतह क्षतिग्रस्त है।
- इसका अधिकांश भाग शुष्क क्षेत्रों में है और यह लगभग तीन अरब लोगों को प्रभावित करता है, जिससे खाद्य सुरक्षा, जल उपलब्धता और आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
- *डेजर्टिफिकेशन एंड लैंड डिग्रेडेशन एटलस 2021* के अनुसार, भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 29.77% (97.85 मिलियन हेक्टेयर) 2018-19 के दौरान भूमि क्षरण से प्रभावित हुआ।

भूमि पुनर्स्थापन के लिए सऊदी अरब का मॉडल

- **क्लाउड सीडिंग पहलें:** कृत्रिम वर्षा वृद्धि का उपयोग शुष्क क्षेत्रों में जल उपलब्धता सुधारने हेतु किया गया। इससे वनस्पति वृद्धि और मृदा आर्द्रता पुनर्स्थापन में सहायता मिली।
- **प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली:** रेत और धूल भरी आंधियों के लिए उन्नत पूर्वानुमान प्रणाली ने पर्यावरणीय और आर्थिक क्षति को कम किया। इससे आपदा तैयारी एवं जलवायु लचीलापन बढ़ा।
- **संरक्षित क्षेत्रों का विस्तार:** जैव विविधता संरक्षण और भूमि क्षरण रोकने हेतु संरक्षित क्षेत्रों का विस्तार किया गया। पारिस्थितिकी तंत्र पुनर्स्थापन से मृदा उर्वरता और भूमि उत्पादकता में सुधार हुआ।

भूमि क्षरण के कारण

- **जलवायु परिवर्तनशीलता:** लंबे समय तक सूखा पड़ने से मृदा आर्द्रता और वनस्पति आवरण घटता है, जिससे भूमि क्षरण बढ़ता है।
- **मृदा अपरदन:** शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में वायु अपरदन प्रमुख है, जिससे ऊपरी मृदा परत नष्ट होती है।
- **बाढ़, चक्रवात और भूस्खलन:** ये प्राकृतिक आपदाएँ मृदा संरचना को बदलकर वनस्पति हटाती हैं।
- **वनों की कटाई:** कृषि, शहरीकरण और उद्योग हेतु वनों की कटाई से भूमि अपरदन बढ़ता है।
- **औद्योगिकीकरण:** उद्योगों और शहरों का विस्तार भूमि सीलिंग और उपजाऊ भूमि की हानि का कारण बनता है। खनन गतिविधियाँ ऊपरी मृदा हटाकर क्षतिग्रस्त परिदृश्य छोड़ जाती हैं।

भूमि क्षरण रोकने हेतु सरकारी पहलें

- **मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना:** किसानों को मृदा पोषक तत्व स्थिति रिपोर्ट प्रदान कर संतुलित उर्वरक उपयोग को प्रोत्साहित किया जाता है।
- **जैविक खेती का प्रोत्साहन:** *परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY)* जैसी पहलें जैविक खेती को बढ़ावा देती हैं।
- **राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (NMSA):** एकीकृत कृषि प्रणाली और कृषि वानिकी के माध्यम से मृदा स्वास्थ्य सुधार पर केंद्रित है।
- **ग्रीन इंडिया मिशन:** पाँच मिलियन हेक्टेयर में वन एवं वृक्ष आवरण बढ़ाने और अन्य पाँच मिलियन हेक्टेयर में वन गुणवत्ता सुधार का लक्ष्य।

- **राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम:** क्षतिग्रस्त वन एवं गैर-वन भूमि में वनीकरण, पुनर्वनीकरण और पारिस्थितिकी पुनर्स्थापन को समर्थन।

वैश्विक पहलें

- **ग्लोबल सॉयल पार्टनरशिप (GSP):** FAO द्वारा संचालित पहल, जिसका उद्देश्य वैश्विक मृदा शासन सुधारना और सतत मृदा प्रबंधन को बढ़ावा देना है।
- **UNCCD की भूमि क्षरण तटस्थता (LDN) 2030 तक:** भूमि क्षरण रोकने और पुनर्स्थापन का वैश्विक संकल्प।
- **4 पर 1000 पहल:** मृदा कार्बन भंडार को प्रतिवर्ष 0.4% बढ़ाने का लक्ष्य, जिससे जलवायु परिवर्तन का मुकाबला और मृदा स्वास्थ्य सुधार हो सके।

निष्कर्ष

- भूमि पुनर्स्थापन केवल पर्यावरणीय आवश्यकता नहीं है, बल्कि यह लचीलापन, स्थिरता और समृद्धि की राह है।
- भूमि पुनर्स्थापन के प्रति सतत प्रतिबद्धता न केवल मरुस्थलीकरण से लड़ती है, बल्कि समावेशी विकास, स्थिरता और दीर्घकालिक समृद्धि को भी बढ़ावा देती है।

संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण से निपटने का कन्वेंशन (UNCCD)

- UNCCD की स्थापना 1994 में भूमि की रक्षा और पुनर्स्थापन हेतु की गई थी, ताकि सुरक्षित, न्यायसंगत एवं सतत भविष्य सुनिश्चित किया जा सके।
- यह मरुस्थलीकरण और सूखे के प्रभावों से निपटने के लिए बनाया गया एकमात्र कानूनी रूप से बाध्यकारी ढाँचा है।
- कन्वेंशन के 197 पक्षकार हैं, जिनमें 196 देश और यूरोपीय संघ शामिल हैं।

स्रोत: DTE

संक्षिप्त समाचार

भारत का लक्ष्य: 2035 तक 60% गैर-जीवाश्म ईंधन ऊर्जा स्रोत

संदर्भ

- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क कन्वेंशन और पेरिस समझौते के अंतर्गत भारत के अद्यतन *राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC)* 2031–2035 को स्वीकृति दी है।

अद्यतन NDCs

- **उत्सर्जन तीव्रता में कमी:** भारत ने 2005 के स्तर से 2035 तक GDP की उत्सर्जन तीव्रता (प्रति GDP इकाई CO_2) को 47% तक घटाने का संकल्प लिया है।
  - 2005 से 2020 के बीच भारत पहले ही लगभग 36% उत्सर्जन तीव्रता घटा चुका है।
- **गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता का विस्तार:** भारत ने 2035 तक अपनी स्थापित विद्युत क्षमता का 60% गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से प्राप्त करने का लक्ष्य रखा है।
  - 2026 तक भारत ने पहले ही 52% से अधिक गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता हासिल कर ली है।
- **कार्बन सिंक का निर्माण:** भारत ने 2035 तक वन एवं वृक्ष आवरण के माध्यम से 3.5 से 4 अरब टन CO_2 समतुल्य कार्बन सिंक बनाने का संकल्प लिया है।

राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC)

- पेरिस समझौते के हस्ताक्षरकर्ता के रूप में भारत को 2025 में अद्यतन NDC प्रस्तुत करना आवश्यक था।
- NDCs देश-विशिष्ट जलवायु कार्ययोजनाएँ हैं, जिनमें ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन घटाने और जलवायु परिवर्तन के अनुरूप ढलने के लक्ष्य शामिल होते हैं।
- इन्हें समय-समय पर संशोधित कर महत्वाकांक्षा बढ़ाई जाती है।
- **भारत के NDC के मार्गदर्शक सिद्धांत:**
- भारत का NDC *सामान्य लेकिन विभेदित जिम्मेदारियाँ और संबंधित क्षमताएँ (CBDR-RC)* सिद्धांत पर आधारित है। यह दृष्टिकोण समानता और जलवायु न्याय पर बल देता है।
- भारत का NDC विकासात्मक आवश्यकताओं, ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु प्रतिबद्धताओं के बीच संतुलन स्थापित करता है।

स्रोत: TH

यूथालिया ज़ुबीनगार्गी

संदर्भ

- अरुणाचल प्रदेश के एक वन में दर्ज की गई तितली की नई प्रजाति का नाम असम के सांस्कृतिक प्रतीक गायक *ज़ुबीन गर्ग* के नाम पर रखा गया है।

परिचय

- *यूथालिया ज़ुबीनगार्गी* का सामान्य नाम बसार ड्यूक प्रस्तावित किया गया है।
- यह तितली *यूथेलिया* वंश से संबंधित है, जो दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में सामान्यतः पाई जाती है।
- इस समूह की तितलियाँ प्रायः वनों में देखी जाती हैं और इनके भूरे पंखों पर हल्के धब्बे होते हैं।
- नई खोजी गई प्रजाति अपने विशिष्ट पंख पैटर्न और संरचनात्मक विशेषताओं के कारण अलग पहचानी गई।
  - यह तितली ठंडे, छायादार वन आंतरिक क्षेत्रों को पसंद करती है।

- इसके जीवन चक्र, प्रजनन पैटर्न और होस्ट पौधों के बारे में अभी बहुत कम जानकारी उपलब्ध है।
- *यूथालिया ज़ुबीनगार्गी* भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में दर्ज इस समूह की 80 से अधिक प्रजातियों में से एक है।

स्रोत: TH

आंध्र प्रदेश में ऑलिव रिडले कछुओं का संरक्षण

संदर्भ

- वन्यजीव प्रबंधन प्राधिकरण और कोरिंगा वन्यजीव अभयारण्य के अधिकारियों ने काकीनाडा खाड़ी के होप द्वीप पर ऑलिव रिडले कछुओं के लगभग 20,000 अंडों का संरक्षण किया है।

ऑलिव रिडले कछुए के बारे में

- **नाम:** इनके हृदयाकार कवच के जैतून-हरे रंग के कारण इन्हें *ऑलिव रिडले* कहा जाता है।
- **आहार:** ये मांसाहारी हैं और मुख्यतः जेलीफ़िश, झींगा आदि खाते हैं।
- **वितरण:** ये विश्वभर में मुख्यतः प्रशांत, हिंद और अटलांटिक महासागरों के उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
- भारत में प्रमुख घोंसले बनाने के स्थल: ओडिशा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के तटीय क्षेत्र।
  - *रुशिकुल्या रूकेरी तट (ओडिशा)*
  - *गाहिरमाथा बीच (भीतरकनिका राष्ट्रीय उद्यान)*
- **विशेषता:** ये अपनी अनोखी सामूहिक अंडे देने की प्रक्रिया *अरिबाडा* के लिए प्रसिद्ध हैं, जिसमें हजारों मादा एक ही तट पर अंडे देती हैं।
- **संरक्षण स्थिति**
  - **IUCN रेड लिस्ट:** Vulnerable
  - **CITES:** परिशिष्ट I
  - **भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972:** अनुसूची I

कोरिंगा वन्यजीव अभयारण्य

- यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा मैंग्रोव वन है, जो आंध्र प्रदेश के काकीनाडा के पास स्थित है।
- यह अभयारण्य गोदावरी नदी के मुहाने पर स्थित है, जहाँ नदी बंगाल की खाड़ी से मिलती है।
- प्रमुख प्रजातियाँ: फिशिंग कैट, स्मूथ-कोटेड ऊदबिलाव, और गोल्डन सियार।

होप द्वीप

- *होप द्वीप (क्रच्छु लंका)* काकीनाडा तट से दूर स्थित एक छोटे टैडपोल आकार का द्वीप है।
- यह गोदावरी की सहायक नदी *कोरिंगा* द्वारा लाए गए अवसाद से बना है।
- यह आंध्र प्रदेश में ऑलिव रिडले कछुओं के सुरक्षित घोंसले बनाने के स्थलों में से एक है।

स्रोत: TH

खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स

संदर्भ

- खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स (KITG) का प्रथम संस्करण छत्तीसगढ़ में आयोजित किया जा रहा है, जिसमें रायपुर, जगदलपुर और सरगुजा तीन मेजबान शहर हैं।
  - ये खेल दस दिनों तक आयोजित किए जा रहे हैं।

परिचय

- यह *खेलो इंडिया कार्यक्रम* के अंतर्गत आदिवासी खिलाड़ियों को समर्पित प्रथम राष्ट्रीय बहु-खेल आयोजन है।
- खेलों में सात पदक खेल शामिल हैं—एथलेटिक्स, फुटबॉल, हॉकी, वेटलिफ्टिंग, तीरंदाजी, तैराकी और कुश्ती—साथ ही प्रदर्शन खेल जैसे मल्लखंब और कबड्डी।
  - 30 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से 60,000 से अधिक खिलाड़ी 338 पदकों के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे।
- प्रतिभा पहचान हेतु *प्रतिभा पहचान एवं विकास समिति(TIDC)* नियुक्त की गई है, जो संभावित खिलाड़ियों को आगे प्रशिक्षण और विकास के लिए चुनेगी।
- **मास्कॉट:** आधिकारिक मास्कॉट *मोरवीर* है, जो छत्तीसगढ़ी शब्दों *मोर (अपना)* और *वीर (वीरता)* से लिया गया है।

खेलो इंडिया योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएँ

- खेलो इंडिया यूथ गेम्स
- खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स
- खेलो इंडिया पैरा गेम्स
- खेलो इंडिया विंटर गेम्स
- खेलो इंडिया बीच गेम्स

स्रोत: PIB

तुंगुस्का वायु रक्षा मिसाइल प्रणाली

संदर्भ

- रक्षा मंत्रालय ने *तुंगुस्का वायु रक्षा मिसाइल प्रणाली* की खरीद के लिए अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए हैं।

परिचय

- तुंगुस्का सोवियत मूल की (1980 के दशक की शुरुआत में शामिल) ट्रैक्ड, स्व-चालित वायु रक्षा प्रणाली है, जिसे जमीनी बलों को निम्न-उड़ान वाले हवाई खतरों से बचाने के लिए डिजाइन किया गया है।
- **उन्नत संस्करण:** 2K22M, 2K22M1, जिनमें बेहतर फायर कंट्रोल और मिसाइल क्षमता है।
- **NATO नामकरण:** SA-19 "Grison."
- यह प्रणाली अद्वितीय है क्योंकि इसमें मिसाइल और तोप दोनों एक ही प्लेटफॉर्म पर संयोजित हैं।

प्रमुख विशेषताएँ

- **हाइब्रिड प्रणाली:** सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलों को जुड़वां 30 मिमी ऑटो-कैनन के साथ एकीकृत करती है।
- **मिसाइलें:**
  - 9M311 श्रृंखला
  - **रेंज:** 8–10 किमी
  - **ऊँचाई:** 3,500 मीटर तक
  - **मार्गदर्शन:** रेडियो कमांड

- **ऑटो-कैनन:**
  - **फायर दर:** 3,900–5,000 राउंड/मिनट
- **रडार एवं ट्रैकिंग:** 360° लक्ष्य अधिग्रहण रडार, जिसकी पहचान सीमा 18 किमी तक है।

स्रोत: ET

रेड-क्राउन्ड रूफ्ड टर्टल

संदर्भ

- कभी गंगा की शान रही रेड-क्राउन्ड रूफ्ड टर्टल अब तीव्रता से सिकड़ते आवास में जीवित है।

परिचय

- **वैज्ञानिक नाम:** ***बटागुर कचुगा***
- **वंश:** *बटागुर* (भारत में पाई जाने वाली तीन बड़ी स्वच्छ जल की प्रजातियों में से एक)।
- **आवास:** भारत के अलावा बांग्लादेश और नेपाल में सीमित आवास है, लेकिन वहाँ कोई पुष्ट जंगली जनसंख्या नहीं है।
- **आहार:** मुख्यतः शाकाहारी; यह जलीय वनस्पति को नियंत्रित करने और पोषक चक्र बनाए रखने में सहायता करता है, जिससे संतुलित स्वच्छ जल का पारिस्थितिकी तंत्र कायम रहता है।
- **खतरे:** वयस्कों और अंडों का अत्यधिक शिकार, अवैध व्यापार और आवास का क्षरण।
- **संरक्षण स्थिति:**
  - **IUCN रेड लिस्ट:** *अत्यंत संकटग्रस्त (Critically Endangered)*
  - **भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972:** अनुसूची I
  - **CITES:** परिशिष्ट I

क्या आप जानते हैं?

- भारतीय कछुआ संरक्षण कार्यक्रम (*Indian Turtle Conservation Program*), *नमामि गंगे* तथा उत्तर प्रदेश एवं राजस्थान वन विभागों के सहयोग से इस प्रजाति की पूर्व की महिमा को पुनर्स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

स्रोत: DTE